राज
कॉमिक्स
मूल्य 6.00 संख्या 364
अश्वराज
इस कॉमिक्स के साथ अश्वराज का एक आकर्षक स्टीकर मुफ्त
www.comics.animehood.net

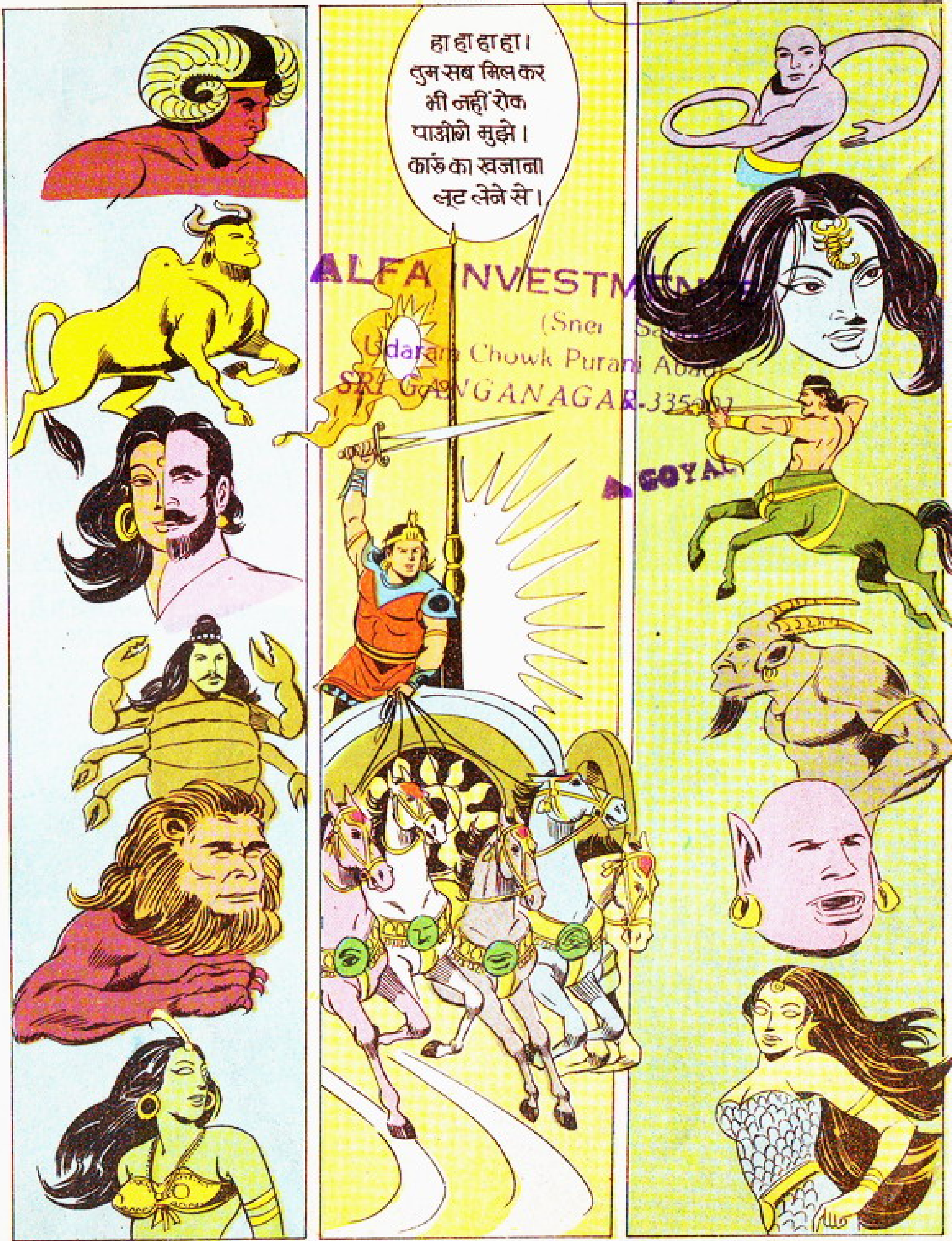

ALFA INVESTMENT
(Snei Sa
Udaram Chowk Purani Abadi
SRI GANGANAGAR-335001
GOYAL

© RAJA POCKET BOOKS

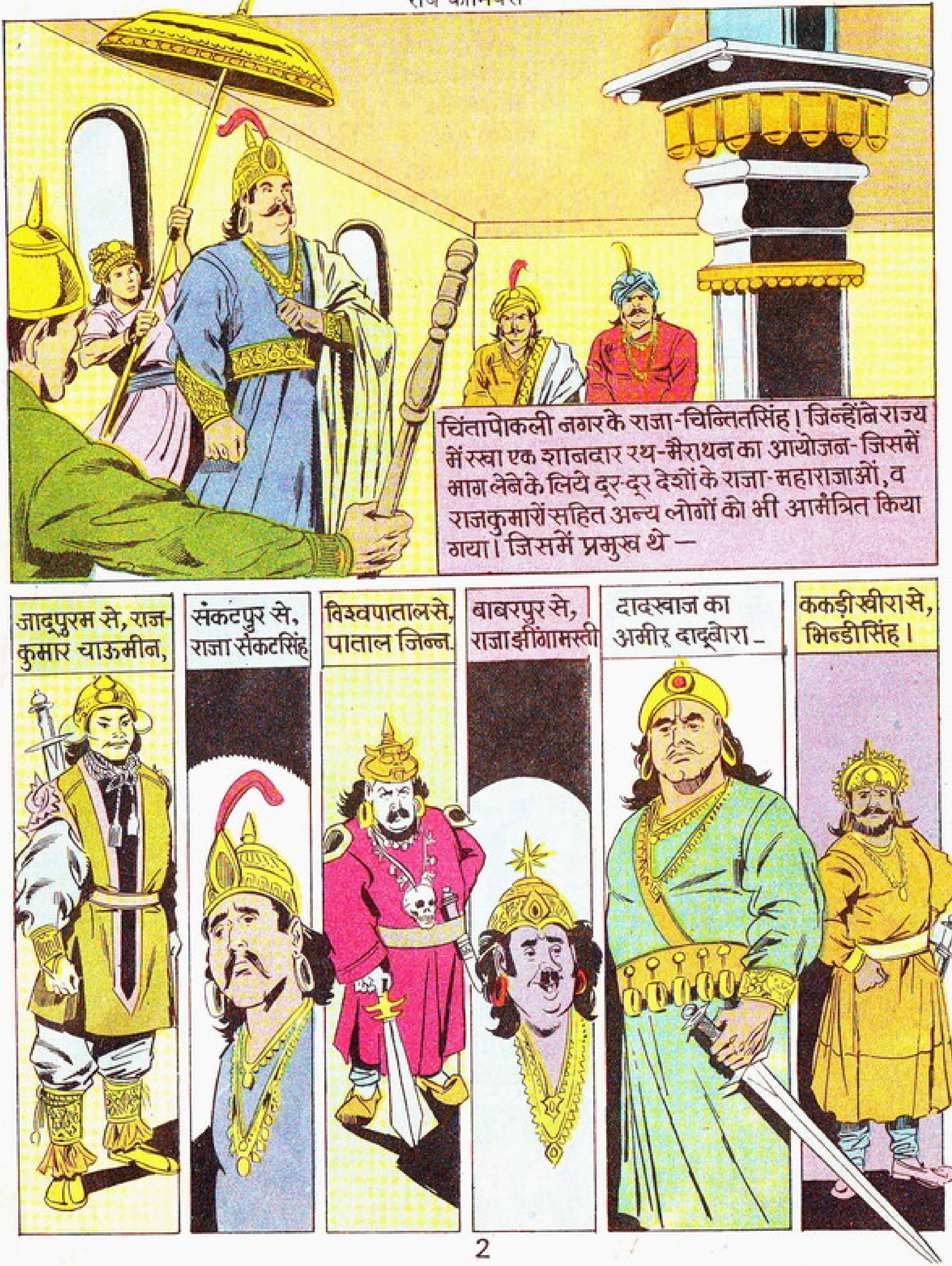
चिंतापोकली नगर के राजा-चिन्तितसिंह! जिन्होंने राज्य में रखा एक शानदार रथ-मैराथन का आयोजन- जिसमें भाग लेने के लिये दूर-दूर देशों के राजा-महाराजाओं, व राजकुमारों सहित अन्य लोगों को भी आमंत्रित किया गया। जिसमें प्रमुख थे —
जादूपुरम से, राजकुमार चाऊमीन,
संकटपुर से, राजा संकटसिंह
विश्वपाताल से, पाताल जिन्न.
बाबरपुर से, राजा झींगामस्ती
दादखाज का अमीर दादूवीरा —
ककड़ीखीरा से, भिन्डीसिंह।

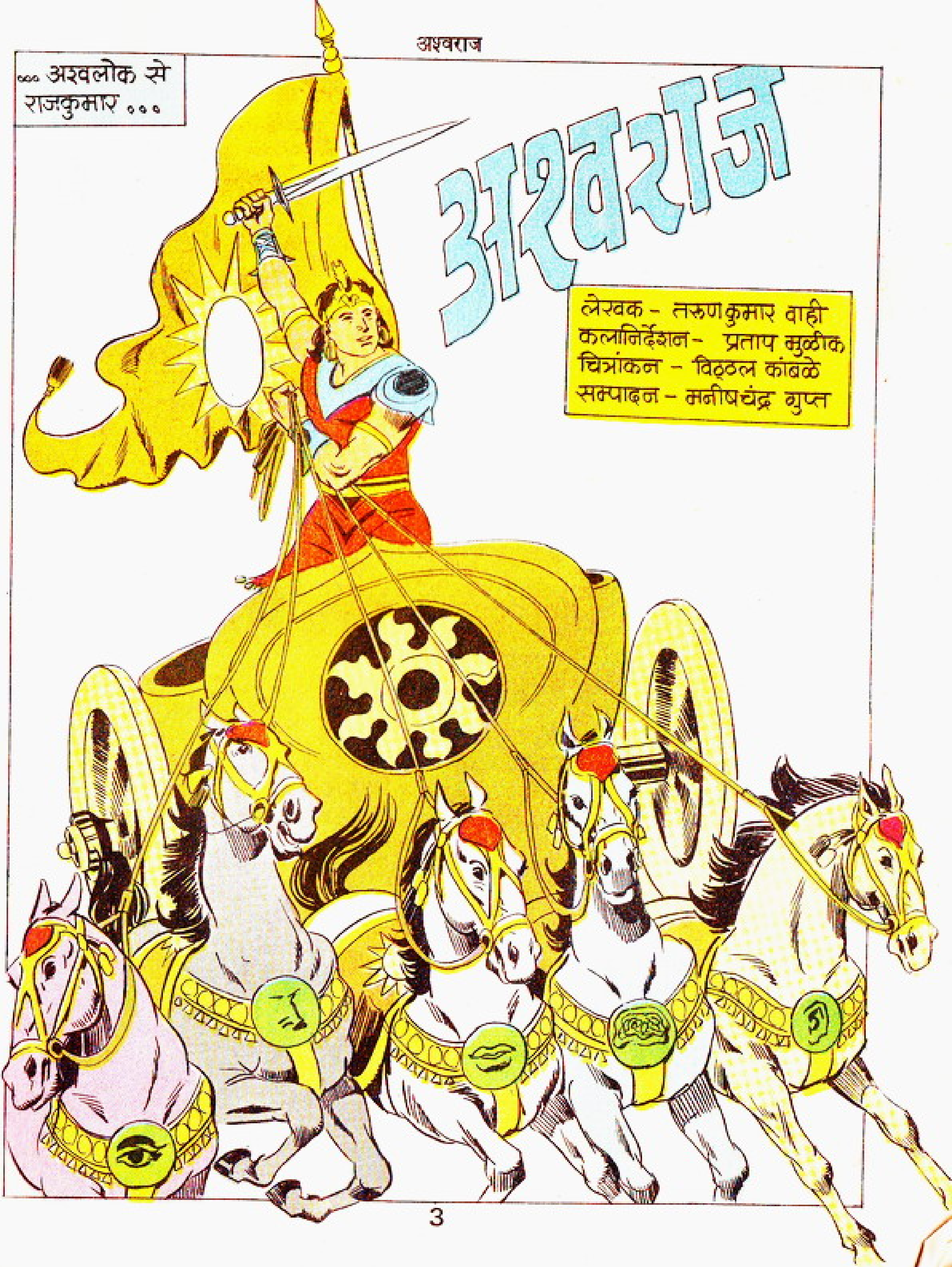
... अश्वलोक से राजकुमार ...
अश्वराज
लेखक - तरुणकुमार वाही
कलानिर्देशन - प्रताप मुळीक
चित्रांकन - विठ्ठल कांबळे
सम्पादन - मनीषचंद्र गुप्त

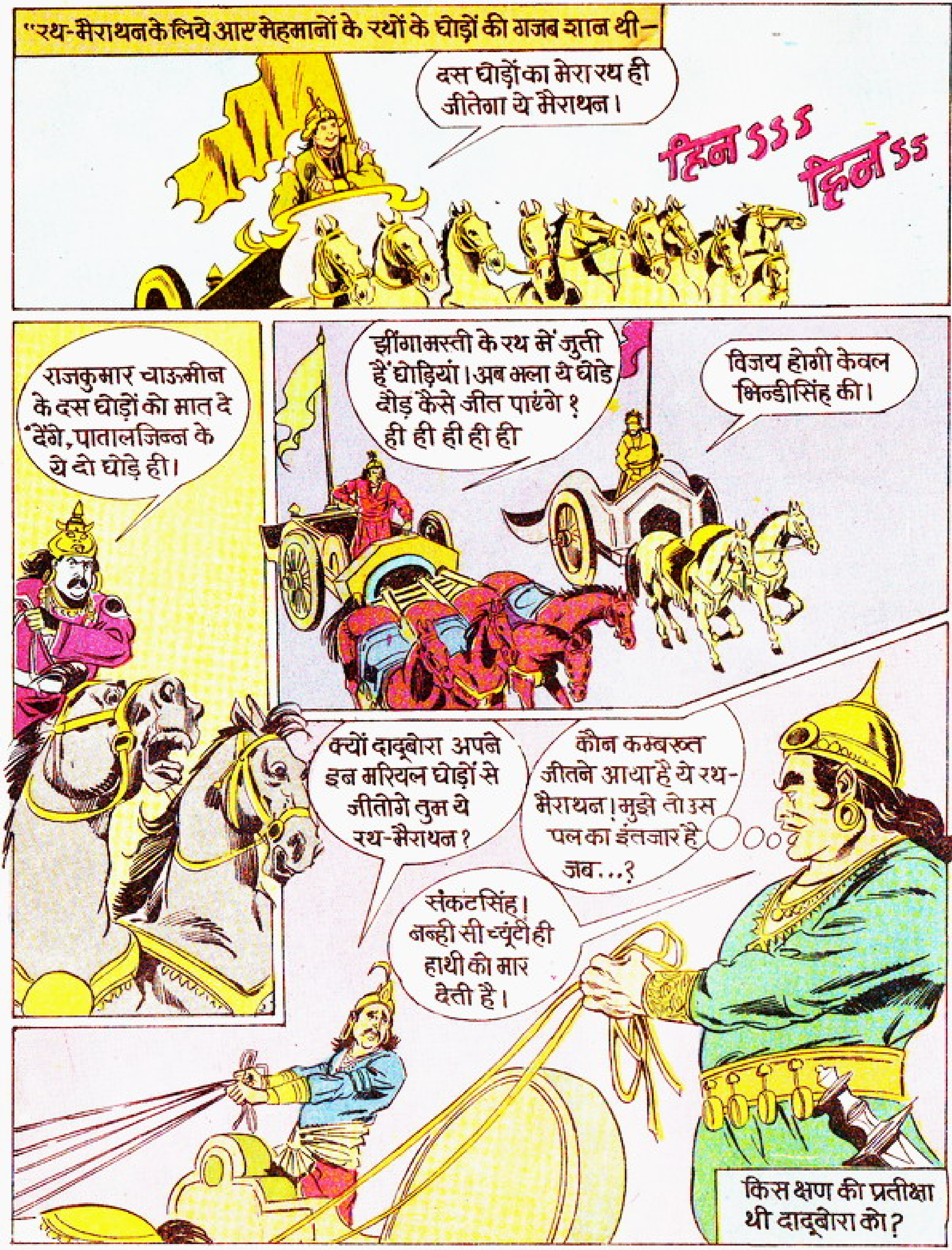
"रथ-मैराथन के लिये आए मेहमानों के रथों के घोड़ों की गजब शान थी—
दस घोड़ों का मेरा रथ ही जीतेगा ये मैराथन।
हिन ऽऽऽ
हिन ऽऽ
राजकुमार चाऊमीन के दस घोड़ों को मात देंगे, पातालजिन्न के ये दो घोड़े ही।
झींगामस्ती के रथ में जुती हैं घोड़ियां। अब भला ये घोड़े दौड़ कैसे जीत पाएंगे? ही ही ही ही ही
विजय होगी केवल भिन्डीसिंह की।
क्यों दादूबीरा अपने इन मरियल घोड़ों से जीतोगे तुम ये रथ-मैराथन?
कौन कम्बख्त जीतने आया है ये रथ-मैराथन! मुझे तो उस पल का इंतजार है जब...?
संकटसिंह! नन्ही सी च्यूंटी ही हाथी को मार देती है।
किस क्षण की प्रतीक्षा थी दादूबीरा को?

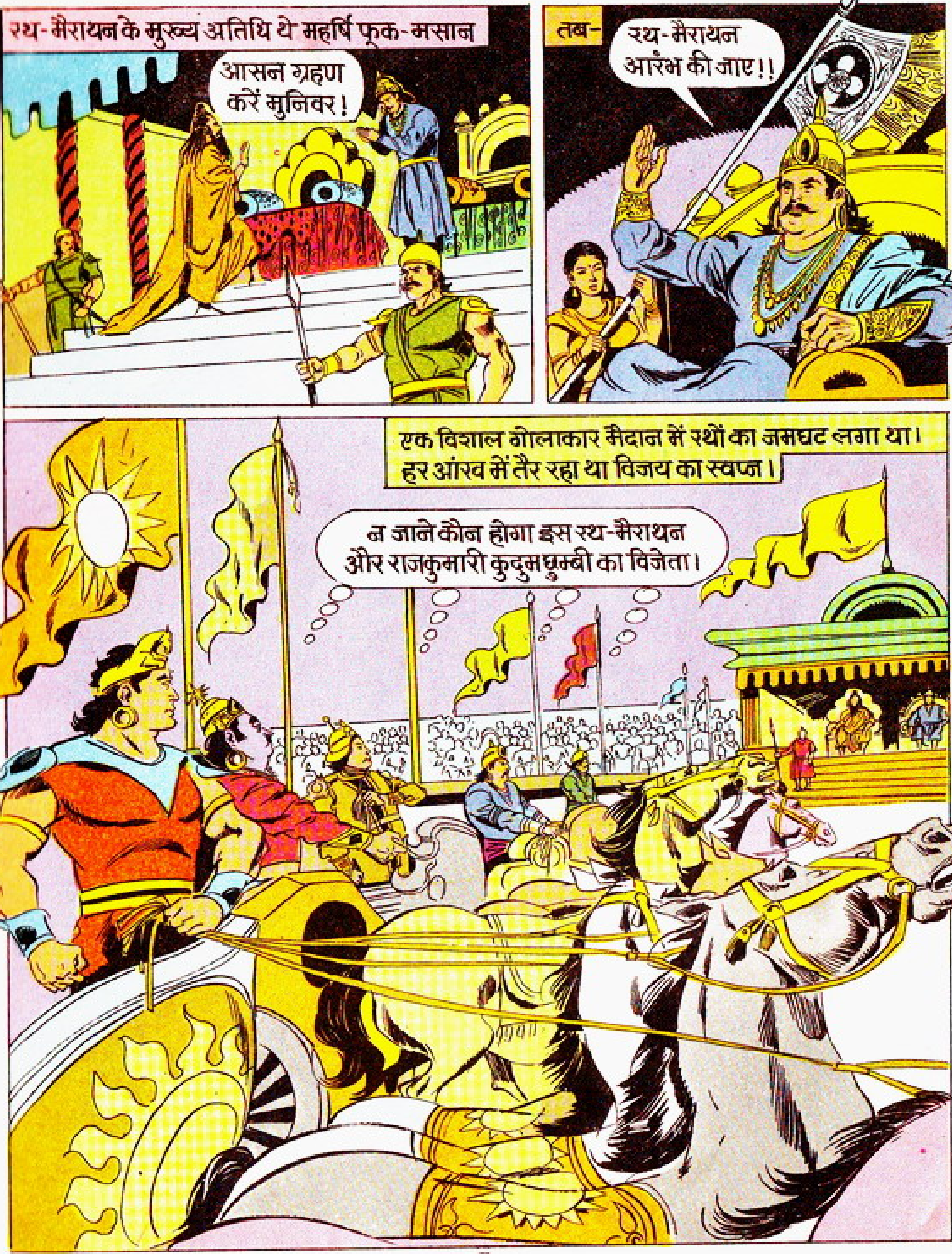
रथ-मैराथन के मुख्य अतिथि थे महर्षि फूक-मसान
आसन ग्रहण करें मुनिवर!
तब-
रथ-मैराथन आरंभ की जाए!!
एक विशाल गोलाकार मैदान में रथों का जमघट लगा था। हर आंख में तैर रहा था विजय का स्वप्न।
न जाने कौन होगा इस रथ-मैराथन और राजकुमारी कुदुमघुम्बी का विजेता।

महर्षि फ़्रक-मसान ने रथ मैराथन की झण्डी दिखाई—
आरंभ हो।
घोड़ों की टापों और सवारों के शोर से गूंज उठा रथ-मैराथन का मैदान—
हुर्र्र्र... चलो भागो रे
हुर्र्र्र...हिक...हिक
भाग रे भाग
निकलो रे आगे। मरियल हैं घोड़े दादूबोरा के। ही ही ही।
ओह! इस संकटसिंह की बोलती तो मैं जरूर बन्द करूंगा।

भिन्डी सिंह की विजय का स्वप्न रथ के पहियों के साथ ही चूर-चूर हो गया–
ओह! रथ का पहिया गया।
कड़ाक
राजकुमार चाऊमीन का एक घोड़ा न जाने कैसे खुल गया। और फिर सब के सब एक दूसरे पर ढेर हो गये–
हिन
हिन
चूक
हाय राजकुमारी!
राजा झींगा मस्ती की घोड़ियां इतनी तेज दौड़ीं कि–
अरे रे रे!
एक पहिया ही अलग हो गया उसके रथ का।
संकटसिंह भी हो गया धराशायी–
आ आ... बचाओ..
उसके घोड़े उसे संकट में छोड़कर भागते चले गए।
संकटसिंह! तेरे घोड़े तो सचमुच बहादुर निकले रे!
मुझे बचा लो दादूबीरा! रथ गिरा तो बहुत चोट लगेगी मुझे।

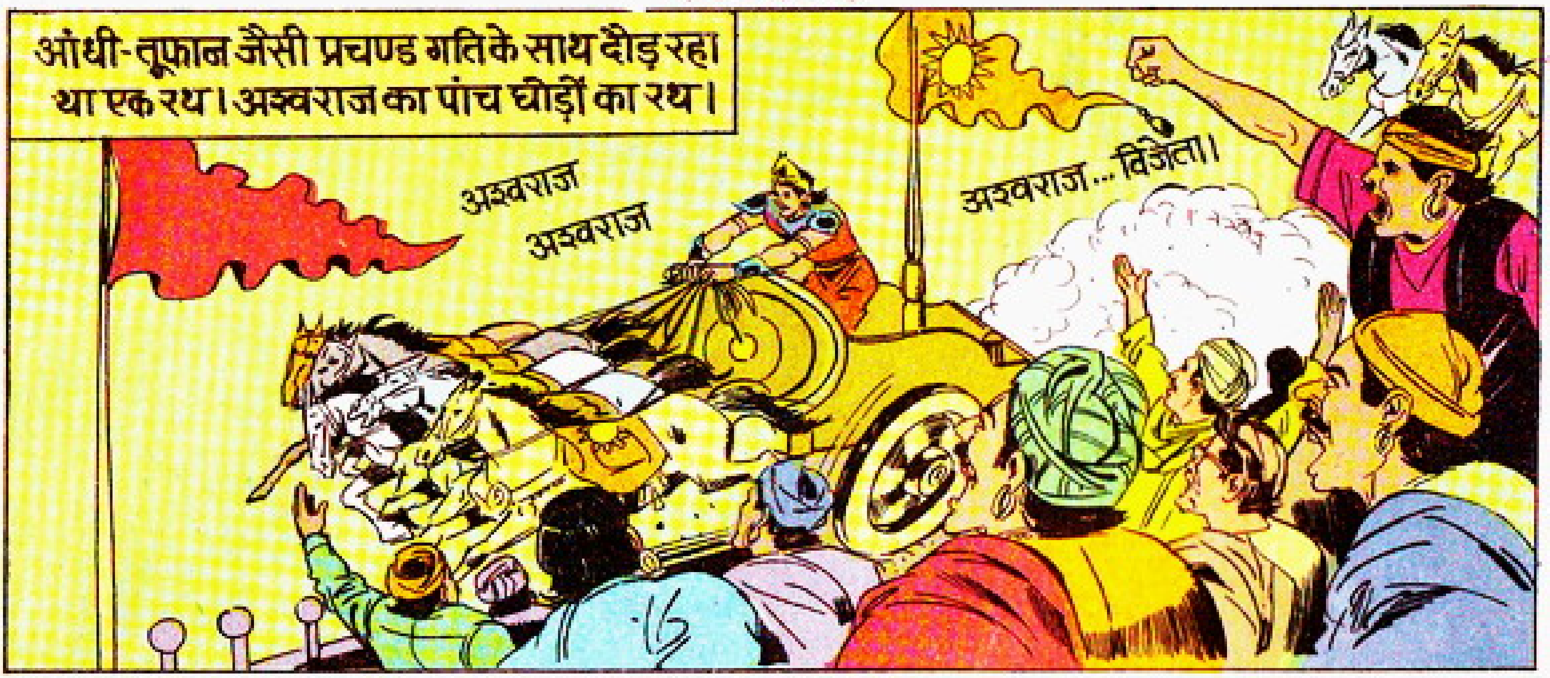
आंधी-तूफान जैसी प्रचण्ड गति के साथ दौड़ रहा था एक रथ। अश्वराज का पांच घोड़ों का रथ।
अश्वराज
अश्वराज
अश्वराज... विजेता।

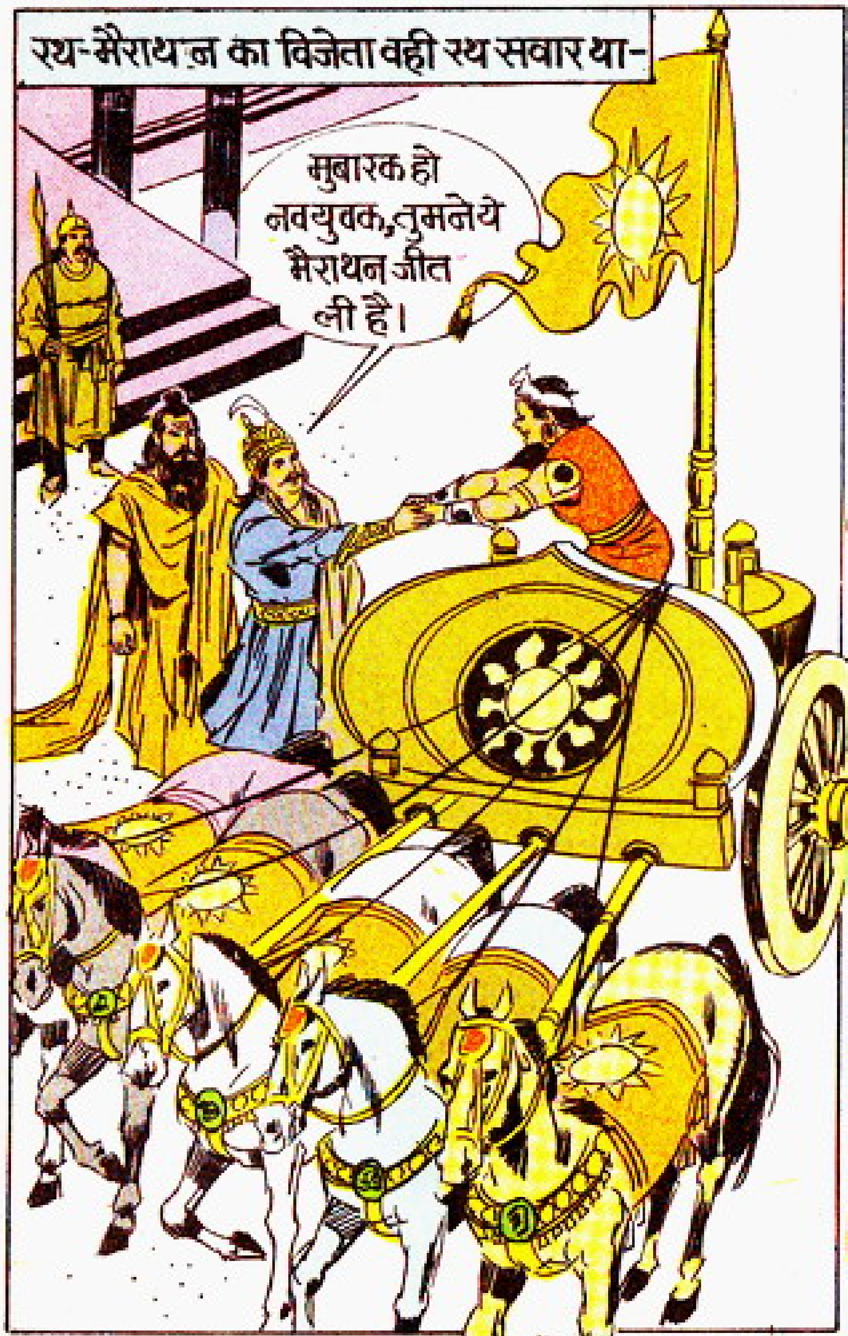
रथ-मैराथन का विजेता वही रथ सवार था-
मुबारक हो नवयुवक, तुमने ये मैराथन जीत ली है।

और दादूबीरा की निगाहें भी जा टिकी थीं रथ-मैराथन के विजेता अश्वराज पर-
रथ-मैराथन का विजेता ...अश्वराज! जिसकी तलाश मुझे यहां खींच लाई।

दादखाज का अमीर दादूबोरा क्या षड्यन्त्र रच रहा था अश्वराज के खिलाफ ?
अब मुझे कोई नहीं रोक सकता कारूं का खजाना प्राप्त करने से! ही ही ही ही!
राजकुमारी कुदुमछुम्बी ने जयमाला अश्वराज को पहना दी -
अश्वराज... जिन्दाबाद
राजकुमारी कुदुमछुम्बी की..जय
समापन समारोह के पश्चात सब मेहमानों को उनके कक्षों में पहुंचा दिया गया-
राजकुमारी का सौंदर्य ही अश्वराज को ले आया रथ-मैराथन में खींच कर। अद्भुत है कुदुमछुम्बी तुम्हारा रूप-सौन्दर्य।
रूप-सुन्दरी का अस्तित्व खतरे में था-
बौने शैतान बुखारी को बाहर निकालना होगा!
दादूबोरा की आंखों में थी सांप सी चमक -
बौने शैतान बुखारी! बहुत सो लिये।
अब बाहर निकलो इस डिबिया से।

आश्चर्य! नन्हा-सा अंगूठे भर का बौना शैतान बुखारी बाहर निकला, तो...।
बोलो
दादूबोरा! कैसे याद किया?
राजकुमारी कुदुमघुम्थी को केवल तुम ला सकते हो बुखारी।
मैं जाता हूं।
राजकुमारी के कक्ष तक पहुंचना मेरे लिये मुश्किल नहीं।
इन दो पहरेदारों से तो निबटना ही होगा।
पहरेदारों के लिये ये चौंकने के क्षण थे-
अरे! ये बौना कहां से घुस आया यहां?
बौना नहीं हूं मैं। शैतान हूं।

बौने का शस्त्र हवा में सनसनाया –
सन्नन
खचाक
अब तू यहां से बचकर नहीं जायेगा बौने शैतान!
गजब की फुर्ती थी बुखरी में
अपनी मौत भेजी है तूने मेरे पास।
खचाक
तुझे बचकर नहीं जाने दूंगा शैतान बौने!
मुझे कोई नहीं रोक सकता। मैं शैतान हूं।

अगले दिन हंगामा मच गया –
राजकुमारीजी महल से गायब हैं।
उनके कक्ष के बाहर दो सैनिकों की लाशें पाई गई हैं।
कहां गई राजकुमारी?
कौन ले गया राजकुमारी को? जवाब दो। रात तुम सब महल की पहरेदारी पर थे।
म...महल से कोई बाहर नहीं गया महाराज!
खामोश!
शोले बरस रहे थे राजा चिन्तित सिंह की आंखों से।
तभी –
महाराज की जय हो। महाराज! कल रथ-मैराथन में हिस्सा लेने आए मेहमानों में से दादरवाज के अमीर दादूबोरा भी महल में नहीं हैं।
दादूबोरा?
सिकुड़ गईं राजा चिन्तित की आंखें –

दादूबोरा अपने रथ पर उड़ा जा रहा था –
हा हा हा ! राजकुमारी कुदुमघुम्बी को मेरी कैद से केवल मैं स्वतंत्र कर सकता हूं।
बौने शैतान बुखारी ने लाजवाब काम किया है। अब मुझसे दूर नहीं है कारूं का खजाना।
महल में अश्वराज ने घोषणा की –
मैं जाऊंगा राजकुमारी कुदुमघुम्बी की तलाश में।
किन्तु अश्वराज!
उसे रोको मत राजन! कोई साधारण मानव नहीं, बल्कि एक विलक्षण मानव है अश्वराज। जाने दो उसे।
झोंकाड़वन में रथ रोका अश्वराज ने –
हिन्न
हा हा हा...
अब इनकी मदद के बिना मैं एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा सकता।

रक्ताम्बर!
कालाखोर!
अश्ववट!
नीलकंठ!
श्रव्यशक्ति!
तुम पांचों पांच हाथ हो मेरे।
शैतान दादूबीरा की खोज में तुम्हें मेरा साथ देना होगा।

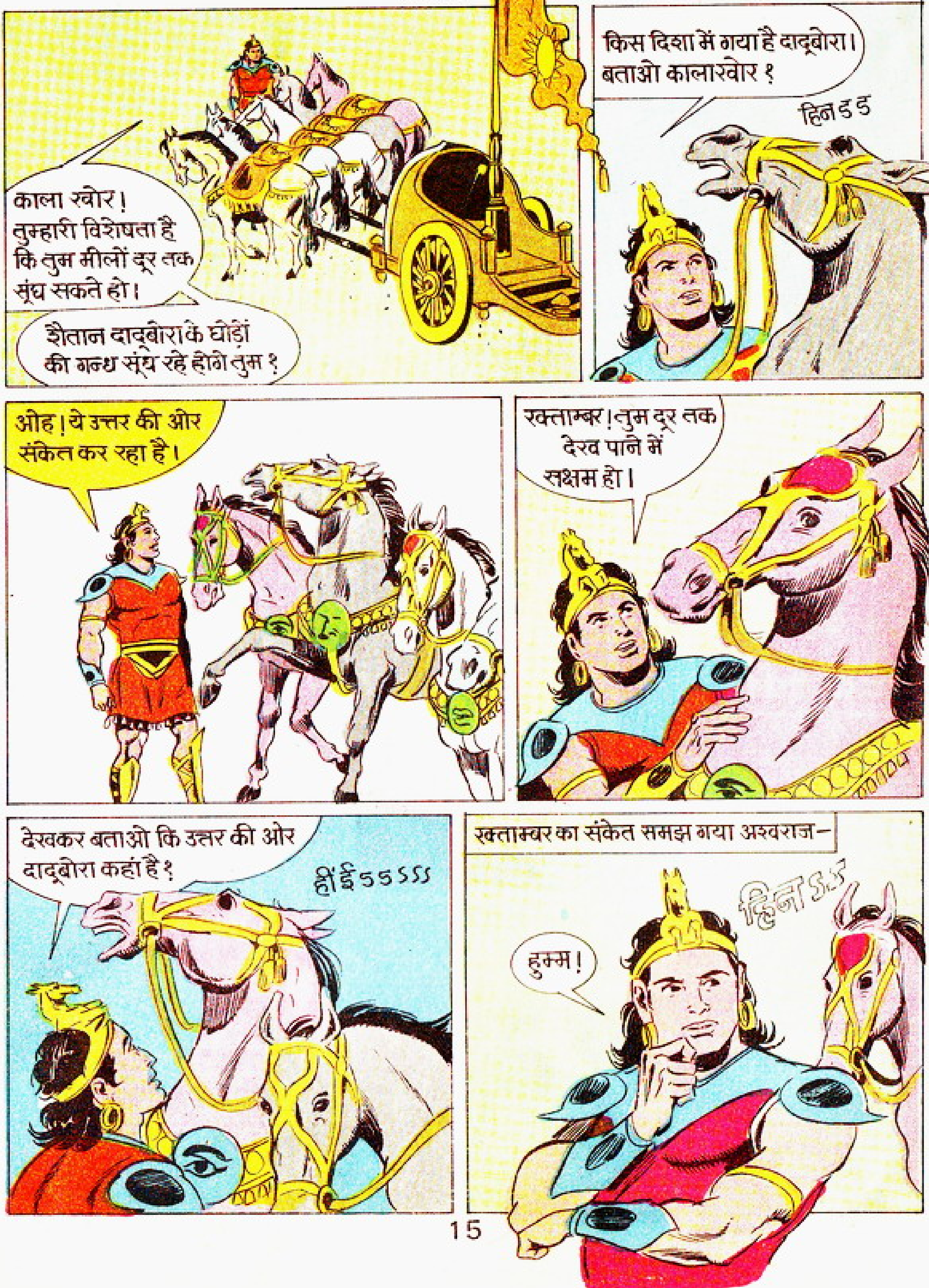
काला खोर! तुम्हारी विशेषता है कि तुम मीलों दूर तक सूंघ सकते हो।
शैतान दादूबोरा के घोड़ों की गन्ध सूंघ रहे होगे तुम?
किस दिशा में गया है दादूबोरा। बताओ कालाखोर?
हिनऽऽ
ओह! ये उत्तर की ओर संकेत कर रहा है।
रक्ताम्बर! तुम दूर तक देख पाने में सक्षम हो।
देखकर बताओ कि उत्तर की ओर दादूबोरा कहां है?
हींईऽऽऽऽऽ
रक्ताम्बर का संकेत समझ गया अश्वराज—
हुम्म!
हिनऽऽ

श्रव्यशक्ति। क्या तुम उस शैतान की आवाज सुन पा रहे हो?
तुम भी तो मीलों दूर तक सुन सकते हो श्रव्यशक्ति!
हीनSSSनSS
हा हा हा। राजकुमारी कुदुमछुम्बी को मेरे अलावा कोई नहीं देख सकता। हा हा हा
श्रव्यशक्ति! क्या सुना तुमने, अश्ववट को बताओ।
हिनSSS
अश्ववट के पास भी थी अद्भुत शक्ति
हा हा हा! राजकुमारी कुदुमछुम्बी को मेरे अलावा कोई नहीं देख सकता। हा हा हा।
श्रव्यशक्ति की भाषा को समझा उसने और अश्वराज को मानव बोली में वह सब बता दिया।

अश्वराज की भृकुटियां तन गईं-
ओह! लेकिन तेरी मृत्यु को मैं अवश्य देख पा रहा हूं दादूबोरा।
तब अश्वराज मुखातिब हुआ नीलकंठ से –
नीलकंठ! अद्भुत मस्तिष्क क्षमता है तुम्हारे अन्दर अश्ववट की बताओ कि क्या दादूबोरा पर आक्रमण का ये उचित अवसर है मेरे लिये।
एक से बढ़कर एक थे रथ मैराथन के विजेता-
अश्वराज! नीलकंठ कह रहा है कि इस में सोचना कैसा? उस शैतान को तुरन्त मौत के घाट उतार दो।
ऐसा ही करूंगा मैं अश्ववट! ऐसा ही करूंगा मैं नीलकंठ!
झंकाड़वन दहल उठा था अश्वराज के क्रोध से-

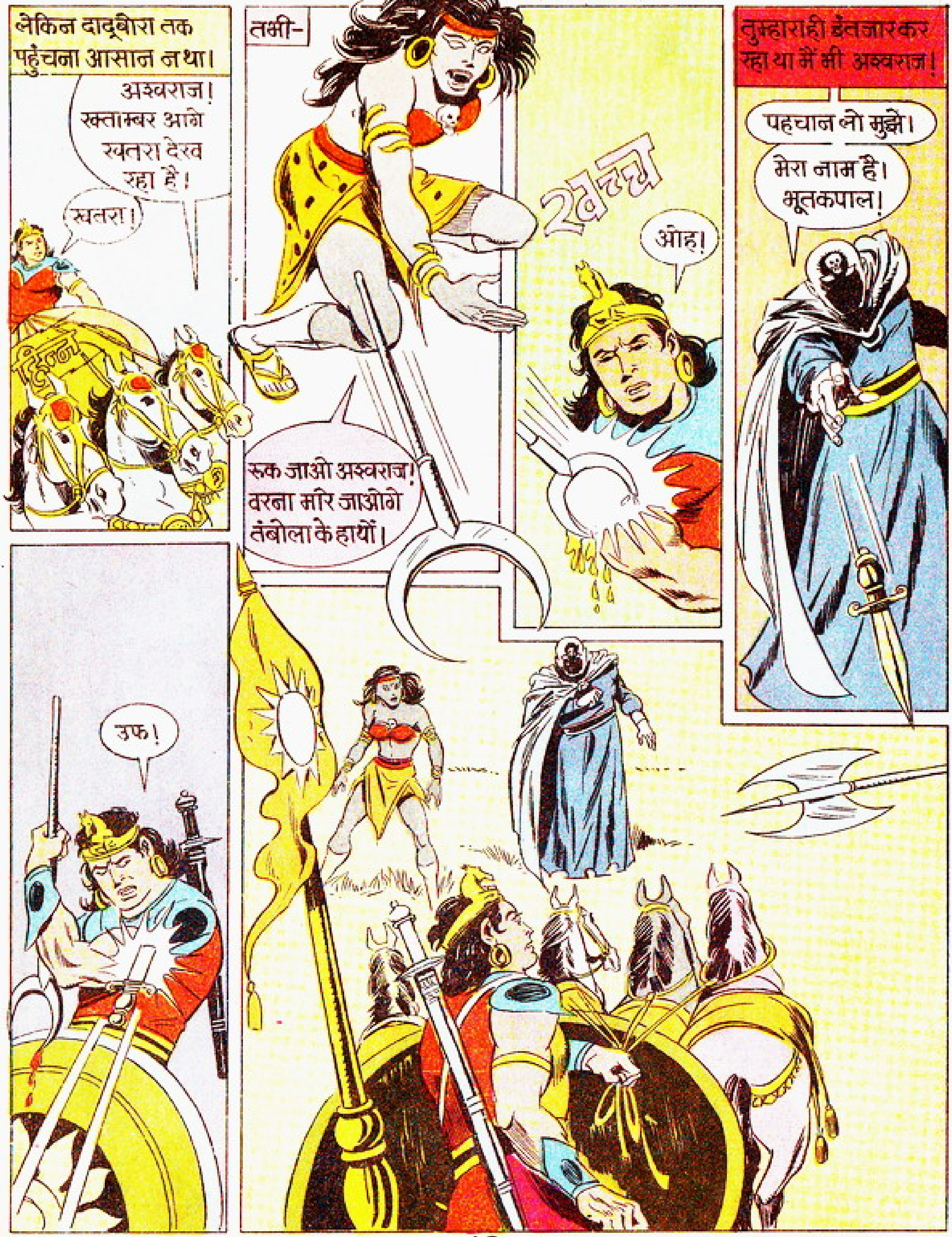
लेकिन दादूबीरा तक पहुँचना आसान न था।
अश्वराज! रक्ताम्बर आगे खतरा देख रहा है!
खतरा!
तभी-
रूक जाओ अश्वराज! वरना मारे जाओगे तंबोला के हाथों।
खच्च
ओह!
तुम्हारा ही इंतजार कर रहा था मैं भी अश्वराज!
पहचान लो मुझे।
मेरा नाम है। भूतकपाल!
उफ!

बिच्छू धड़ा से भी मिल लो अश्वराज!
हा हा हा हा हा
ओहऽ आह!

श्रव्यशक्ति कुछ सुन रहा था-
हा हा हा! दादूबोरा के अंगरक्षकों से बचेगा क्या अश्वराज?
?
अश्ववट ने श्रव्यशक्ति का संदेश दिया अश्वराज को-
अश्वराज! ये तीनों दादूबोरा के अंगरक्षक हैं।
दादूबोरा?
अच्छा है। वहां उसे बचाने के लिए अंगरक्षकों की भीड़ नहीं होगी।
अश्वराज! अश्वराज। अश्वराज। अकेला अश्वराज।
तंबोला। मृतकपाल। बिच्छूधड़ा तीन-तीन शैतान-

अश्वराज! बचा तंबोला का वार।
वार तो अश्वराज के बचाना तुम।
स... ठक
ओह! अच्छी तलवार बाज है ये तंबोला।
मेरा तलकश तलवारों से कभी खाली नहीं होता।
दुश्मन का गला रेतने के लिये एक तलवार हमेशा रहती है उसमें।

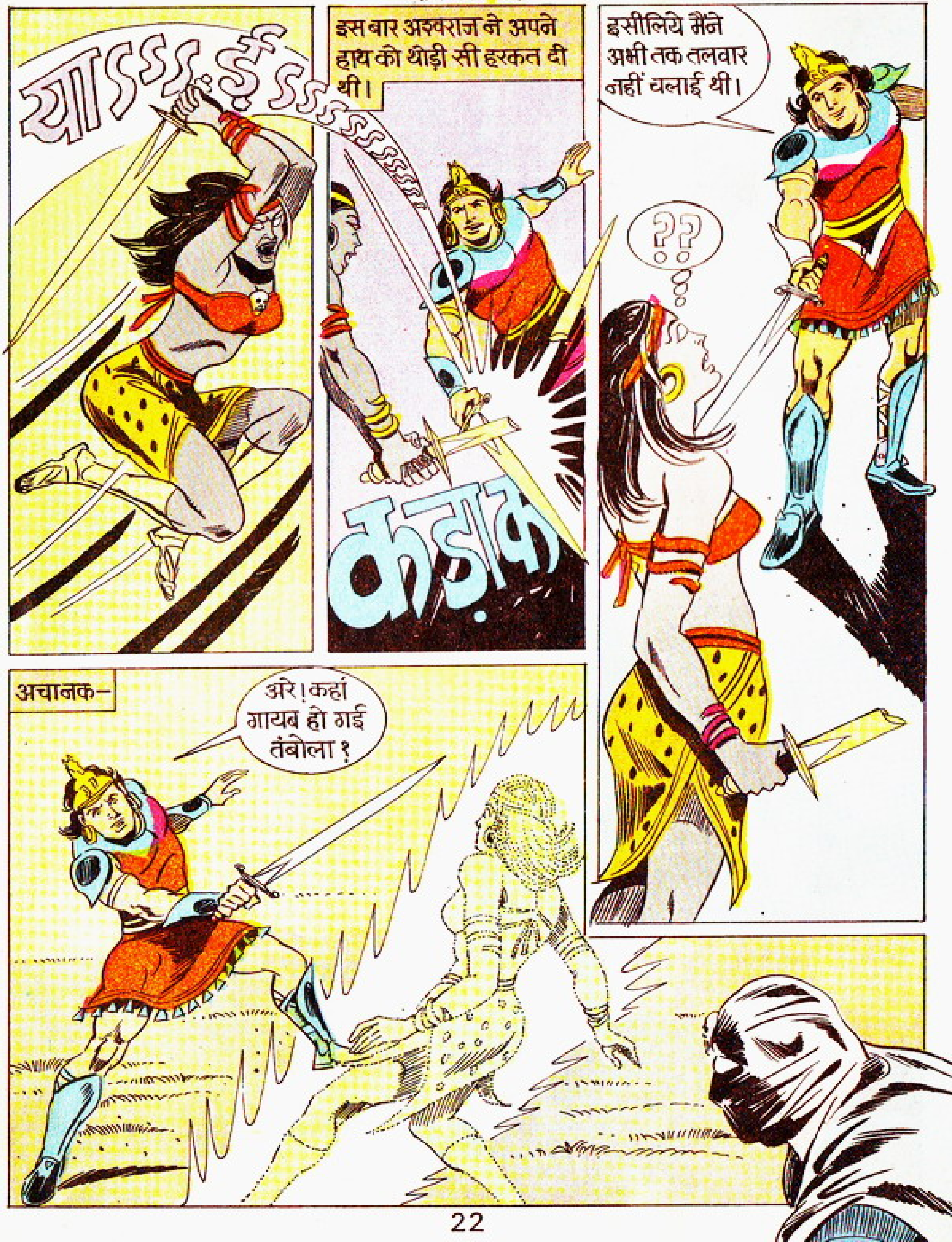
याऽऽऽ..ईं ऽऽऽऽऽऽऽऽऽ
इस बार अश्वराज ने अपने हाथ की थोड़ी सी हरकत दी थी।
कड़ाक
इसीलिये मैंने अभी तक तलवार नहीं चलाई थी।
??
अचानक–
अरे! कहां गायब हो गई तंबोला ?

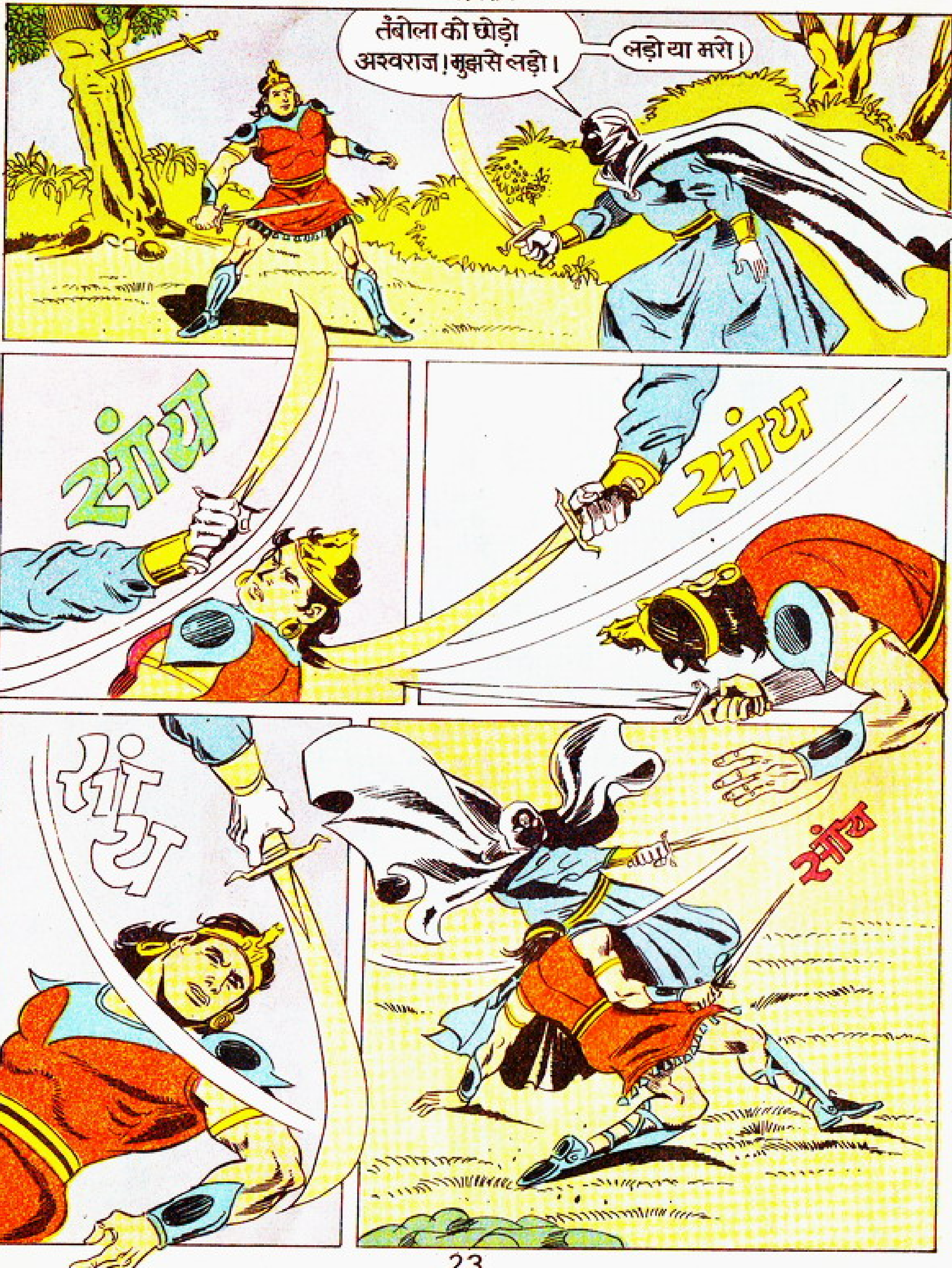
तंबोला को छोड़ो अश्वराज ! मुझसे लड़ो ।
लड़ो या मरो !
सांय
सांय
खांय
सांय

भूतकपाल की टक्कर से बचना अश्वराज!
ओह! यह क्या? ये तो तिलिस्मी शक्ति का प्रयोग कर रहा है!
कड़ाक

इस बार संभलने का अवसर नहीं दिया अश्वराज ने भूतकपाल को–
क्यों भूतकपाल! इस हाथ को काट दूं न?
?
इसके साथ भूतकपाल भी हो गया गायब–
अरे! ये भी गायब!
और अब था अश्वराज के सामने बिच्छू यड़ा।
बिच्छू धड़ा के जहरीले डंक दर्द करते हैं शरीर में।
खच्च
खच्च
डंकों से ही सारे वार नहीं करता मैं।

लेकिन बड़ी फुर्ती के साथ पलटकर आया अश्वराज-
तेरी जिन्दगी और मौत मेरे हाथ में है बिच्छूधड़ा!
और इसी के साथ-
बिच्छूधड़ा भी गायब!
किन्तु अगले ही पल-
हाहाहा
हाहाहा
हाहाहा
अरे! ये तीनों तो फिर प्रकट हो गये।
हम तीनों का संयुक्त आक्रमण नहीं झेल पायेगा अश्वराज!

महर्षि फूकमसान ने झूठ नहीं कहा था। विलक्षण मानव था अश्वराज। अदभुत।
विस्मयकारी... अश्वलोक का महाबली...
...महापराक्रमी। अश्वमानव।
अश्वराज

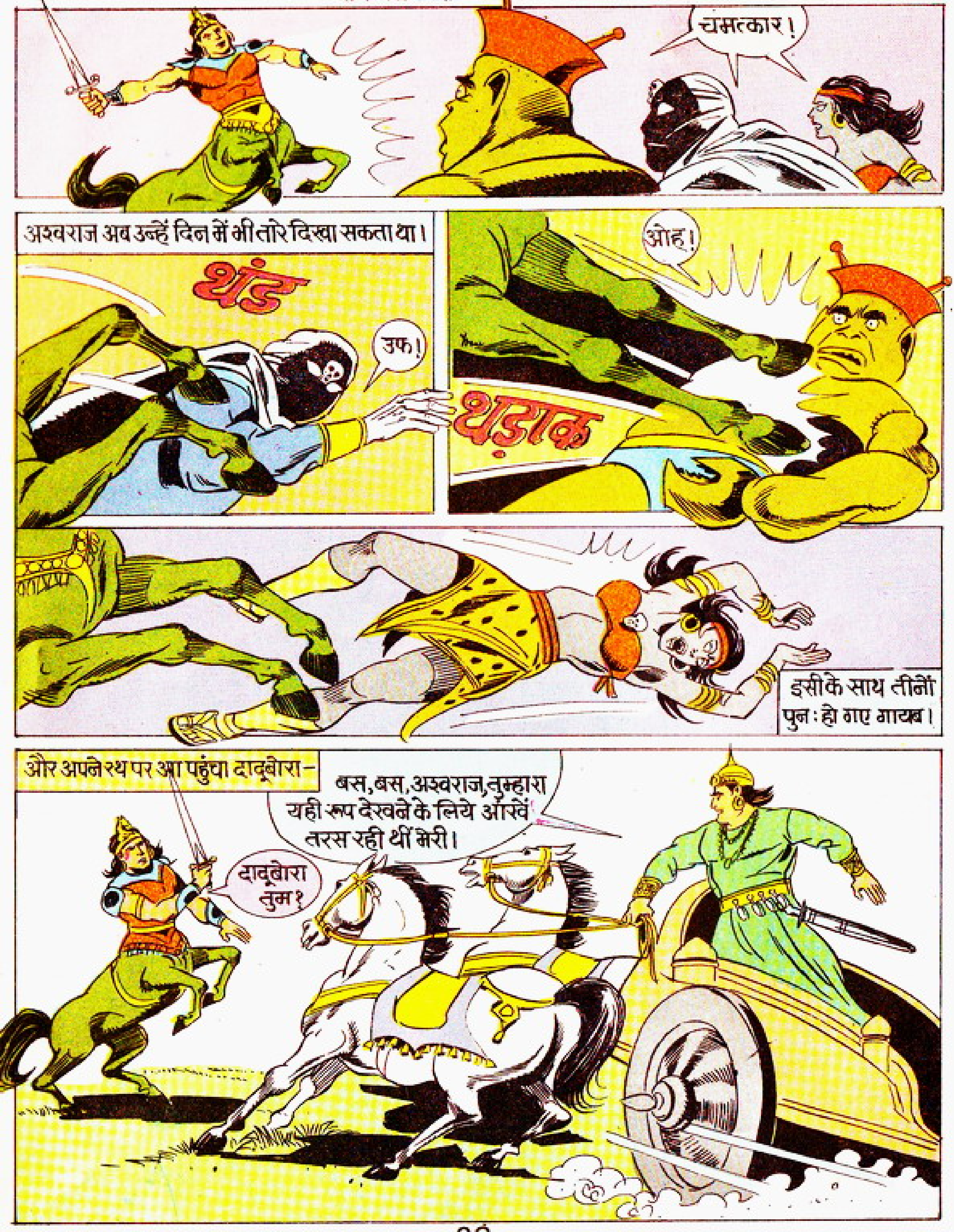
चमत्कार!
अश्वराज अब उन्हें दिन में भी तारे दिखा सकता था।
थंड
उफ!
ओह!
धड़ाक
इसी के साथ तीनों पुन: हो गए गायब।
और अपने रथ पर आ पहुंचा दादूबीरा—
बस, बस, अश्वराज, तुम्हारा यही रूप देखने के लिये आंखें तरस रही थीं मेरी।
दादूबीरा तुम?

तुरन्त ही अश्वराज में परिवर्तित हो गया अश्वमानव -
राजकुमारी कुदुमघुम्बी कहां है शैतान ?
उसका पता मैं तुम्हें तब बताऊंगा अश्वराज ! जब तुम मुझे लाकर दोगे कारू का खजाना।
कारू का खजाना ?
यह बात अच्छी तरह से समझ लो अश्वराज, कि चाहे दादूबोरा लाश में क्यों न बदल जाए पर कारू का खजाना भेंट दिये बिना तुम राजकुमारी को नहीं पा सकते।
दादूबोरा के चेहरे की दृढ़ता को महसूस किया अश्वराज ने -
ठीक है दादूबोरा, ठीक है। लाऊंगा मैं तुम्हारे लिए कारू का खजाना।
वाह !
तो फिर चलो मेरे साथ।
अश्वराज के मस्तिष्क में तूफान सा मचल रहा था।

चिंतापोकली नगर के चप्पे-चप्पे पर छाई थी चिंता ही चिंता।
पता नहीं अश्वराज कब लौटेंगे राजकुमारी को लेकर।
महर्षि फूकमसान योग साधना के बल पर हर पल नजर रखे हुए हैं इस पर।
इधर महल में राजा चिंतितसिंह बेहद चिन्तित थे।
महर्षि, कृपा कर आंखें खोलिए और बताइये कि आप क्या कर रहे हैं?
राजा चिंतित की चिन्ता कुछ कम हुई-
राजन, कहानी दूसरा रूप लेने लगी है।
मैं आपके कहने का तात्पर्य नहीं समझा महर्षि!
चिन्ता और बढ़ गई चिन्तितसिंह की-
अश्वराज कारू का खजाना लेने जा रहा है।
क्या?
शरीर का रोंया-रोंया खड़ा हो गया राजा चिन्तितसिंह का।
महर्षि उठकर चल पड़े-
उसे रोकना होगा राजन! रोकना होगा उसे।

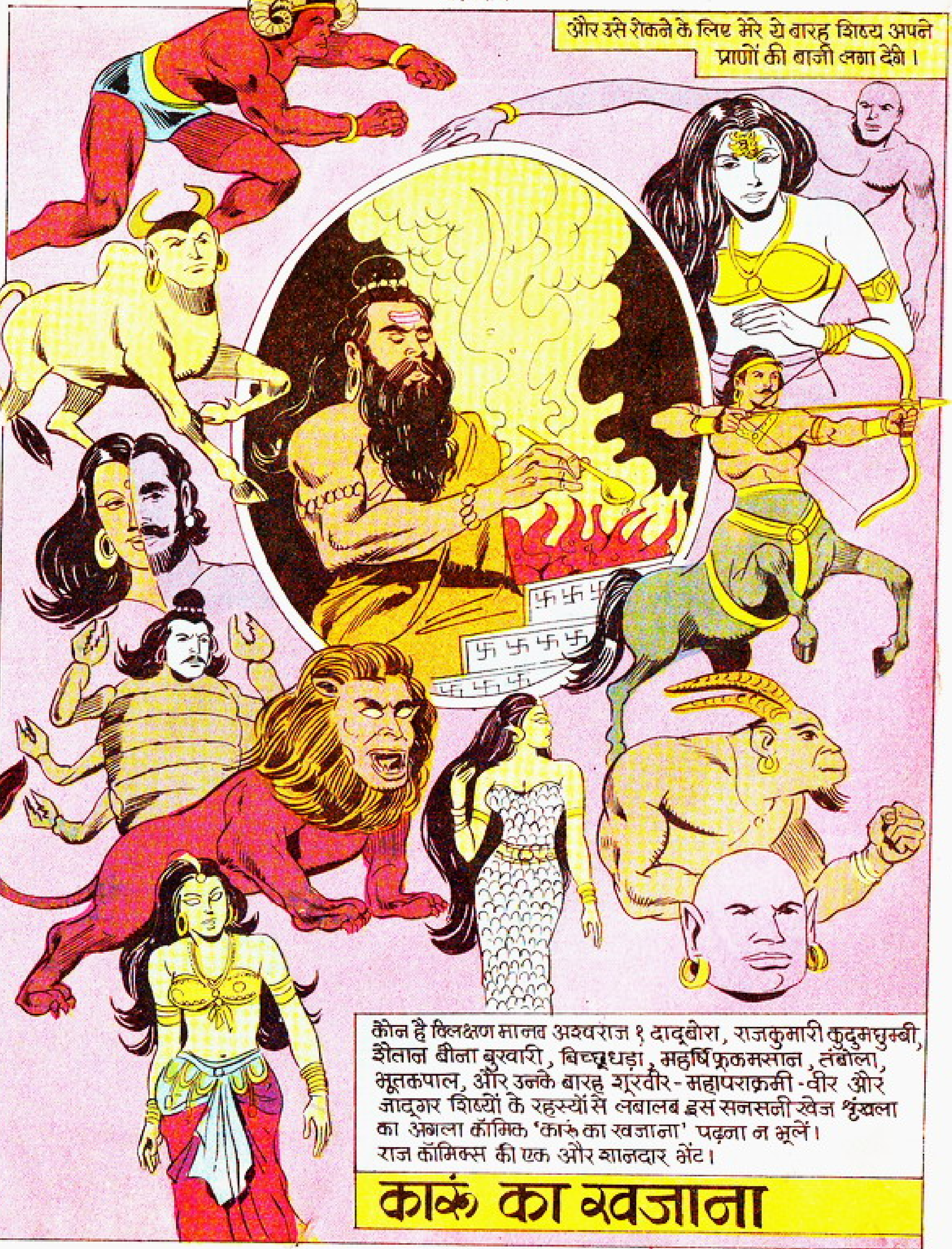
और उसे रोकने के लिए मेरे ये बारह शिष्य अपने प्राणों की बाजी लगा देंगे।
कौन है विलक्षण मानव अश्वराज? दादूबोरा, राजकुमारी कुदुमघुम्बी, शैतान बीना बुखारी, बिच्छूधड़ा, महर्षि फ्रकमसान, तंबोला, भूतकपाल, और उनके बारह शूरवीर-महापराक्रमी-वीर और जादूगर शिष्यों के रहस्यों से लबालब इस सनसनी खेज शृंखला का अगला कॉमिक 'कारू का खजाना' पढ़ना न भूलें। राज कॉमिक्स की एक और शानदार भेंट।
कारू का खजाना